>

Title: Regarding illegal mining in Santhal Pargana in Jharkhand.

**श्री निशिकांत दुबे (गोड्डा):** अध्यक्ष महोदया, मैं संथाल परगना के जिस एरिया से आता हूं, पहले ऐसा होता था और कहा जाता था कि भारत विश्व गुरु है, धर्म गुरु है, तो अंदाजा नहीं होता था, क्योंकि लोगों को लगता था कि मैथेलॉजी है, रामायण में और महाभारत में जो बातें लिखी हुई हैं, वे गलत हैं। लेकिन जो मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सभ्यता की लिपि मिली है, यदि उसकी भाषा का क्लियरेंस हुआ है तो वह दिखाता है कि संथाल की भाषा मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से काफी हद तक मिलती है। इसी कारण हमारे यहां जो मंदार पहाड़ है, जहां की पुतुल देवी जी सांसद हैं। वहीं पर देवों और दानवों में समुद्र मंथन हुआ था, जिसमें अमृत मिला, एरावत मिला और लक्ष्मी जी मिलीं। यह मैथेलॉजी साइंस के आधार पर, बीरबल साहनी जो बहुत बड़े ज्योलोजिस्ट थे, उन्होंने इसे प्रूव किया है। सन् 1940 से लेकर 1948 तक उन्होंने संथाल परगना जो कि अंग प्रदेश का अंग है, उसमें उन्होंने काफी रिसर्च किया। रिसर्च करने के बाद उन्होंने यह देखा कि साहबगंज की जो पहाड़ी है, उसमें डायनासोर युग के जीवाश्म हैं। 15 लाख से 20 लाख करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म मिलते हैं। यदि मंदार पहाड़ को आप देखेंगे, यदि इसकी तुलना करेंगे कि वहां जीवाश्म मिला है अंग प्रदेश में, यह बीरबल साहनी ने साइंस के आधार पर प्रूव किया है। लेकिन उस जीवाश्म को रखने के लिए, उसके प्रिजर्वेशन के लिए आज तक भारत सरकार या राज्य सरकार ने कोई काम नहीं किया है। यही कारण है कि खनन माफिया के द्वारा अंधाधुंध उस इलाके में पत्थर तोड़ने का व्यवसाय हो रहा है। इस कारण वे जीवाश्म दिन-प्रतिदिन खत्म होते जा रहे हैं। उसे भी पत्थर माफिया यह कहकर तोड़ रहा है कि यह भी पत्थर का ही कोई अंग है। इस पर आईआईटी खड़गपुर के, लखनऊ के बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर, वहां की स्थानीय सिद्धु कानू यूनिवर्सिटी और भागलपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं, लगातार प्रधान मंत्री को लिख रहे हैं। मैंने भी पर्यावरण मंत्री जयंती नटराजन जी से और नारायण स्वामी जी, जो कि यहां बैठे हुए हैं, उनसे मिला, लेकिन आज तक इस बारे में कुछ नहीं हुआ। पिछले 50-60 साल से वैज्ञानिक, वहां के स्थानीय लोग, वहां के जनप्रतिनिधि लगातार लड़ाई लड़ रहे हैं। मैं आपके माध्यम से यह बताना चाहता हूं कि यह देश की बात है। मैं कनाडा गया था, वहां केलेग्री, एक छोटी सी जगह है। वहां पर पूरे देश भर के डायनासोर युग के जीवाश्म हैं। उस म्यूजियम को देखने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं। मेरी आपके माध्यम से रिक्वेस्ट है कि आप इसमें इंटरवीन करें, सरकार को आदेश दें कि इस जीवाश्म की कैसे रक्षा होगी। वहां कैसे म्यूजियम बनाया जाएगा। वहां पर्यटन और साइंस के लिए कैसे व्यवस्था होगी। यदि यह हो जाता है तो संथाल परगना और अंग प्रदेश के लिए बड़ा काम हो जाएगा।

**अध्यक्ष महोदया:** श्री निशिकांत दुबे ने जो विषय उठाया है,

श्रीमती पुतुल कुमारी,

श्री शिवकुमार उदासी,

श्री भर्तृहरि महताब,

श्री रविन्द्र कुमार पाण्डेय और

श्री पी.एल. पुनिया अपने आपको उससे सम्बद्ध करते हैं।